# चाँद रात

29 जिलहिज

खिची हैं तेग़ के हैं चर्ख पर हिलाले अज़ा
सवादे शब है कि खेमों से है धुआँ उठा

न चाँद देखते ही किस तरह बहें आँसू
इसी महीने में अहमद का घर तबाह हुआ

यह चाँद वह है कि दसवीं को जिसकी हाय गज़ब
सरे हुसैन हुआ वक़्ते अस्र तन से जुदा

यही वह चाँद है जिसमें के एहलू कूफ़ा ने
जलाए ख़ेमे और एहले हरम को लूट लिया

इमाम वक़्त जो थे बादे सरवरे ज़ीशा
इसी महीने में आदा ने उनको क़ैद किया

हुआ था जिनके मकाँ से रिवाज़ परदे का
इसी महीने में छीनी सरों से उनके रिदा

थे जमा कूचओ - बाज़ार में तमाशाई
हुजूमे आम मे एहले हरम का सर था खुला

ख़ुदा के वास्ते कुछ जालिमों तरस खाओ
हुजूमे आम कुजा आले बूतुराब कुजा

यज़ीद तख़्त पर है ज़ेरे तख़्त फर्के इमाम
सरे हुसैन कुजा मजलिसे शराब कुजा

है इशतियाक़े ज़ियारत से हिन्द में बेताब
बुला लो 'फिक्र' को रौज़े पर अपने ऐ मौला